9 अशोक का शस्त्र-त्याग

वंशीधर श्रीवास्तव रचित एकांकी 'अशोक का शस्त्र-त्याग' अहिंसा के पक्ष में अपने कथानक का मार्मिक विकास करती है। शांति के पक्ष में सक्रिय होने की शिक्षा देती है। इस लिहाज़ से पाठ की उपादेयता उल्लेखनीय है। अभिनय, नाटकीय दृश्यों का संयोजन, प्रवाहमयता की दृष्टि से पाठ विशिष्ट है।

पहला दृश्य

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फ़हरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिन्ता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

अशोक (स्वत:) : आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका। दोनों ओर से लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल : (सिर झुकाकर) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (प्रवेश कर) महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है!

(संवाददाता चुप रहता है।)

अशोक : बोलते क्यों नहीं तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद है। फिर किस मुँह कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया ।

अशोक : (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ । (हाथ से जाने का संकेत करते हैं।)

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

दूसरा दृश्य

(दूसरे दिन प्रातःकाल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग हैं। जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको ! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फ़हरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक : (तलवार खींचकर) मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!

(सहसा दुर्ग का फ़ाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फ़ाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेस में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की कन्या पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर अपनी सेना से) बहिनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : (स्वतः) यह कौन है? क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (प्रकट) सैनिकों, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी ?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी! दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की हैं। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा : क्यों महाराज ?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी।

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सुनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिन्दूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को, जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारे ख़ून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं। (अशोक सिर झुका लेते हैं।)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

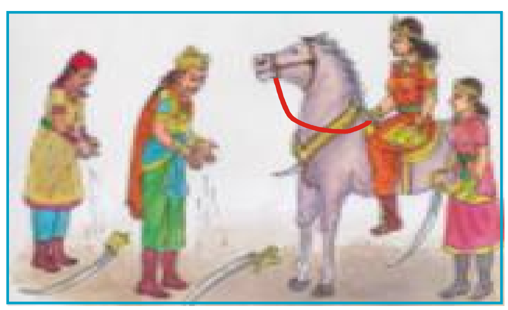

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। (तलवार नीचे फेंक देते हैं।)

पद्मा : यह क्या महाराज!

अशोक : (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।
(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को । मैं हथियार नहीं उठाऊँगा । मेरी प्रतिज्ञा अटल है। (अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा : तो जाइए महाराज ! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए। (पद्मा अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

तीसरा दृश्य

(अशोक और उसके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

बौद्ध भिक्षु : (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि.................

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि..................

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे..................

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे....................

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्ति भर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी :

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।
(पटाक्षेप)

वंशीधर श्रीवास्तव

शब्दार्थ

शस्त्र		हाथ में थामकर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे-तलवार
त्याग	–	छोड़ना
संवाददाता	–	संवाद पहुँचानेवाला
गुप्तचर	–	छिपकर टोह लेनेवाला, जासूस
संचालन	–	नेतृत्व, सुचारु रूप से चलाना
आत्मसमर्पण	–	अपने आपको उपस्थित करना, स्वयं पकड़ में आना
पराधीन	–	दूसरों के अधीन
वीरांगना	–	वीर महिला, युद्ध में लड़ने वाली महिला
साक्षात्	–	सामने
प्रतिज्ञा	–	प्रण, निश्चय

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पद्मा के ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना स्वीकार क्यों नहीं किया ?
2. पद्मा को अशोक से बदला लेने का अच्छा अवसर था, तब भी उसने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

3. बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धर्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

बॉक्स में दिए गए उपर्युक्त वाक्य संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं । इन्हें हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

पाठ से आगे

1. सैनिकों को उत्साहित करने के लिए राजकुमारी पद्मा और सम्राट अशोक द्वारा कही गयी बातों की तुलना कीजिए और बताइए कि अधिक प्रभावशाली कौन है ?
2. इस एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए।
3. अगर आप पद्मा की जगह होते तो क्या करते? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
4. कल्पना कर बताइए कि यदि अशोक और पद्मा का युद्ध हो गया होता तो क्या होता ?
5. 'अस्त्र' और 'शस्त्र' के अंतर को लिखिए ।
6. 'युद्ध से हानि' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए ।

व्याकरण

1. नीचे तीन वाक्य दिए गए हैं जो प्रश्नवाचक, पूर्णविराम और विस्मयादि स्थितियों को प्रकट करते हैं। पढ़िए और समझिए।

(क) मगध की विजय हुई है?
(ख) मगध की विजय हुई है।
(ग) मगध की विजय हुई है !

उक्त उदाहरण के आधार पर ऐसे ही तीन वाक्यों को लिखिए।

2. वाक्य में प्रयोग करके 'शस्त्र' और 'शास्त्र' में अन्तर स्थापित कीजिए।

गतिविधि

1. इस एकांकी के कुछ संवाद जोशीले आवाज़ में कहे गए हैं और कुछ नरम आवाज़ में। ऐसे दो-दो संवादों को लिखिए और अभिनीत कीजिए।
2. किसी उत्सव के मौके पर इस एकांकी का मंचन कीजिए।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)